International Journal of Applied Research 2017; 3(10): 245-249

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(10): 245-249
www.allresearchjournal.com
Received: 10-08-2017
Accepted: 11-09-2017

दीपा पुनेठा
शोधछात्रा वनस्थली विद्यापीठ राजस्थान। भारत

कविता मित्तल
प्रोफेसर वनस्थली विद्यापीठ राजस्थान। भारत

डॉ० सपना शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर वनस्थली विद्यापीठ राजस्थान। भारत

Correspondence
दीपा पुनेठा
शोधछात्रा वनस्थली विद्यापीठ राजस्थान। भारत

उत्तराखण्ड राज्य में उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि का लिंग, संकाय एवं बोर्ड के सन्दर्भ में अध्ययन

दीपा पुनेठा, कविता मित्तल, डॉ० सपना शर्मा

सारांश
सांवेगिक बुद्धि द्वारा विशिष्ट परिस्थितियों में प्रतिक्रिया करने की समझ विकसित होती है। सांवेगिक बुद्धि को जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में अधिकतम लाभ प्राप्त करने हेतु संवेगों का उपयोग करने वाली संज्ञानात्मक योग्यताओं का समूह माना जाता है। संवेगात्मक बुद्धि विद्यालय तथा कार्यक्षेत्र में सफलता को निर्धारित करती है तथा विशिष्ट परिस्थितियों में उपयुक्त प्रतिक्रिया करने की समझ विकसित करती है। किशोरों में सांवेगिक बुद्धि आक्रामकता में कमी, व अधिक लोकप्रियता एवं सुधारात्मक अधिगम की ओर अग्रसर करती हैं। उच्च सांवेगिक बुद्धि के विद्यार्थी स्वयं को प्रत्येक परिस्थिति में समायोजित कर लेते हैं तथा घर, विद्यालय, समाज, कार्यस्थल आदि सभी स्थानों में अपने कर्तव्यों का सफलतापूर्वक सम्पादन करते हैं। उचित सांवेगिक प्रबन्ध उनके चिन्तन में सहायक होता है। प्रस्तुत शोध के द्वारा समस्त शिक्षार्थी लाभान्वित होंगे। क्योंकि बालक यदि अपने संवेगों को नियन्त्रित करने में सफल होगा तो अपनी परिस्थितियों में समायोजन कर उपलब्धियों में उत्तरोत्तर विकास करेगा एवं समाज व राष्ट्र की उन्नति में उसका योगदान रहेगा।

कुट शब्दः उच्च माध्यमिकए अध्ययनरत् विद्यार्थियोंए सांवेगिक बुद्धि

प्रस्तावना
दीर्घकाल तक यह विश्वास किया जाता था कि जीवन की सफलता व्यक्ति के संज्ञानात्मक पक्षों पर निर्भर करती है जिनका सम्बन्ध व्यक्ति की बुद्धिलब्धि से होता है बुद्धि को सर्वप्रमुख स्थान दिया जाता था तथा यह माना जाता था कि जिन विद्यार्थियों में सीखने की क्षमता, तार्किक योग्यता तथा अमूर्त चिन्तन की योग्यता उच्च कोटि की होगी वे अध्ययन में भी उच्च परिणाम प्राप्त करेंगे।, लेकिन मनोविज्ञान के क्षेत्र में नवीन विकास ने सफलता व बुद्धि के बारे में सोच बदल दी है। विगत कुछ वर्षों में इस विचार धारा में तीव्रता से परिवर्तन हुआ है । अब विश्वास किया जाता है कि बुद्धिलब्धि के साथ–साथ व्यक्ति के जीवन में भावनात्मक तथा सामाजिक कौशलों की आवश्यकता भी है तभी जीवन में सफलता प्राप्त की जा सकती है। विद्यार्थियों की सफलता अनेक कारकों पर निर्भर करती है। जिनमें उनके व्यक्तित्व तथा वातावरणीय दोनों प्रकार के कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विद्यार्थियों का बौद्धिक स्तर, अभिक्षमता, स्वास्थ्य, मूल्य एवं संवेग, उपलब्ध संसाधन, अभिभावकों की देख–रेख, अध्ययन आदतें आदि अनेक कारक हैं जो उनकी उपलब्धि को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। आधुनिक शोधों से स्पष्ट होता है कि व्यक्ति को अपने जीवन में जो भी सफलता प्राप्त होती है उसका मात्र 20 प्रतिशत ही बुद्धि के कारण होता है और 80 प्रतिशत सांवेगिक बुद्धि के कारण होता है। गार्डेन के बहुबुद्धिकारक सिद्धान्त तथा साल्वे के सांवेगिक बुद्धि के सिद्धान्त ने सफलता के निर्धारण में क्रान्तिकारी बदलाव ला दिया है। इन विचारकों का मानना है कि व्यक्ति की सफलता उसकी बुद्धि पर ही निर्भर नहीं करती, बल्कि सफलता का अधिकतम श्रेय उसकी सामाजिक एवं सांवेगिक बुद्धि को जाता है।

गौलमैन (1998) के अनुसार– '' सांवेगिक बुद्धि वह योग्यता है जिसमें आत्म जागरूकता, मनोवेग, संतुलन, दृढ़ता, उत्साह, आत्मप्रेरणा, तद्नुभूति और सामाजिक कुशलता को सम्मिलित किया जा सकता है''।

सालवे और मायर (1990) के अनुसार– ''संवेगात्मक बुद्धि स्वयं तथा दूसरों की भावनाओं और संवेगों का निरीक्षण करने तथा इनके मध्य विभेद करने के योग्य बनाती है और इसका प्रयोग स्वयं के विचारों और क्रियाओं को दिशा प्रदान करने में किया जाता है''।

बार–औन (1997) के अनुसार– '' सांवेगिक बुद्धि द्वारा वह क्षमता परावर्तित होती है जिसके माध्यम से दिन–प्रतिदिन के पर्यावरणीय चुनौतियों के साथ निपटा जाता है और जो व्यक्ति को उसके जीवन में सफलता प्राप्त करने में मदद करती है''।

अध्ययन का औचित्यः–

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में सर्वाधिक बल संज्ञानात्मक एवं गत्यात्मक परिक्षेत्रों के उद्देश्यों की सम्प्राप्ति पर है। परिणामस्वरूप विद्यार्थी एवं अध्यापक इन्हें पूरा करने के लिए ज्ञान एवं कौशलों की सम्प्राप्ति को ध्यान में रखकर ही पाठ्यविषयों की योजना तैयार करते हैं। इस कारण एक परिक्षेत्र जिसका संबंध भावना, संवेगों पर नियन्त्रण, मूल्यों की स्थापना, निर्णायक शक्ति आदि से संबंधित है, द्वितीयक बनता जा रहा है। परिणामतः ईर्ष्या, द्वेष, मूल्यहीनता, संवादहीनता आदि अधिक प्रभावी होकर मनुष्य को वास्तविक अर्थों में मनुष्य बनाने में बाधा उत्पन्न कर रहे हैं। साथ ही उसके अन्दर मानवोचित गुणों यथा – सामाजिकता, मूल्य, संवाद की क्षमता, संवेदना, संवेगों पर नियन्त्रण, सहिष्णुता, परहित, शान्तिप्रियता, संतोष आदि को विकसित नहीं होने दे रहे हैं इसका प्रभाव शैक्षिक संस्थाओं सामाजिक सम्बन्धों एवं व्यक्ति के स्वयं के जीवन पर अत्यन्त नकारात्मक ढंग से पड़ रहा है। वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में यह आवश्यक है कि संज्ञानात्मक एवं गत्यात्मक परिक्षेत्रों के साथ–साथ भावात्मक परिक्षेत्र को भी विकसित करने की प्रक्रिया तेज की जाय। भावात्मक परिक्षेत्र के अन्तर्गत भावनाओं को समझना, व्यक्ति के संवेगों को समझना, उन्हें मूल्य प्रदान करना, संवेगों के औचित्य एवं अनौचित्य की समझ विकसित करना एवं तदनुरूप निर्णय लेना आता है।

यदि बालक में संवेगात्मक बुद्धि उच्च होगी तो उसका अधिगम भी प्रभवित होगा। मीर मुईन मकबूल (1989) ने सांवेगिक बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि व सीखने के परिणाम, फर्न, शिंग, चेन, यिंग, मिंग, लीन व अन्य (2005) ने जीवन समायोजन, उमा देवी एण्ड रोमाला रयाल (2005) ने बौद्धिक क्षमता के साथ अध्ययन किया। निष्कर्षतः पाया गया कि विद्यार्थियों कीसांवेगिक बुद्धि अधिगम को प्रभवित करती है।

शोध से प्राप्त परिणाम अभिभावकों के लिए उपयोगी होंगे क्योंकि आज का अभिभावक अपने बालक से प्रत्येक क्षेत्र में उपलब्धियां उच्च चाहता है परिणाम यह प्राप्त होता है कि बालक सभी परिस्थितियों में समायोजित नहीं हो पाता एवं आत्मविश्वास का स्तर कम हो जाता है,जो दुशचिन्ता व भय को जन्म देती है जिसका शैक्षिक उपलब्धि पर सीधा प्रभाव पड़ता है। बालक में संवेगात्मक बुद्धि उपस्थित होगी तो वह सभी तनावों से मुक्त होकर उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त कर माता–पिता की आकांक्षाओं पर खरा उतरेगा क्योंकि संवेगात्मक बुद्धि से व्यक्ति अपने व दूसरों के संवेगों को समझने व उनका प्रबन्धन करने में सक्षम होता है व अपने संवेगों को विचार शील तरीके से प्रदर्शित करता है।

समस्या कथन

उत्तराखण्ड राज्य के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि का लिंग, संकाय एवं विद्यालयी बोर्ड के सन्दर्भ में अध्ययन

शोध के उद्देश्य

1 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि का निम्न के सन्दर्भ में अध्ययन करना :–

1. लिंग 2. संकाय 3. विद्यालयी बोर्ड

शोध परिकल्पनाऐं

परिकल्पना 1: उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि भिन्नतापरक होती है।

परिकल्पना 2–उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में लिंग के सन्दर्भ में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

परिकल्पना 3 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में संकाय के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

(अ) उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला संकाय व विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

(ब) उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययरन कला व वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

(स) उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विज्ञान व वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

परिकल्पना 4– उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में विद्यालयी बोर्ड के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

अध्ययन में प्रयुक्त तकनीकी शब्दः–

सांवेगिक बुद्धि :–सांवेगिक बुद्धि वह बुद्धि है जिसके द्वारा विद्यार्थी अपने भावों एवं संवेगों का उचित प्रकटीकरण एवं नियन्त्रण करता है। तथा दूसरों की भावनाओं एवं संवेगों का सम्मान करता है। गौलमैन (1998) के अनुसार– '' सांवेगिक बुद्धि वह योग्यता है जिसमें आत्म जागरूकता, मनोवेग, संतुलन, दृढ़ता, उत्साह, आत्मप्रेरणा, तद्नुभूति और सामाजिक कुशलता को सम्मिलित किया जा सकता है''।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सांवेगिक बुद्धि से तात्पर्य व्यक्ति की अन्तःवैयक्तिक जागरूकता, अन्तर्वैयक्तिक जागरूकता, अन्तःवैयक्तिक प्रबन्धन एवं अन्तर्वैयक्तिक प्रबन्धन की योग्यता से है।

उच्च माध्यमिक स्तरः– प्रस्तुत शोध अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर से तात्पर्य कक्षा 11 व 12 में अध्ययनरत् नियमित रूप से नामांकित विद्यार्थियों से है।

लिंगः– लिंग से तात्पर्य उच्च माध्यमिक स्तर अध्ययनरत् छात्र तथा छात्राओं से है।

संकाय :– संकाय से तात्पर्य उच्च माध्यमिक स्तर पर कला, विज्ञान तथा वाणिज्य विषय वर्ग से है।

विद्यालयी बोर्ड :–विद्यालयी बोर्ड से तात्पर्य 'बोर्ड ऑफ स्कूल एजुकेशन उत्तराखण्ड' (बी.एस.ई.यू.) तथा 'सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ सेकन्ड्रि एजुकेशन' (सी.बी.एस.ई.) से है।

शोध विधि

समस्या की प्रकृति के आधार पर शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन के स्रोत

उत्तराखण्ड राज्य के सी.बी.एस.ई. तथा बी.एस.ई.यू. द्वारा संचालित विद्यालयों में नियमित रूप से कक्षा 12 में अध्ययनरत् विद्यार्थी।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन में उत्तराखण्ड राज्य के गढ़वाल मण्डल में स्थित उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श

शोधकर्त्री द्वारा गढ़वाल मण्डल के सात जिलों में से चार जिलों का चयन सोद्देश्य न्यादर्शन विधि द्वारा किया गया है। चयनित प्रत्येक जिले में से से चार उच्च माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया है। जिसमें से दो विद्यालय सी.बी.एस.ई. तथा दो विद्यालय बी.ओ.एस.ई.यू. बोर्ड से सम्बद्ध है। प्रत्येक विद्यालय से संकायवार (कला, विज्ञान, वाणिज्य) 20–20 विद्यार्थी लिये गये है। इस प्रकार चार जिलों से चयनित 16 विद्यालयों से 960 विद्यार्थी यादृच्छिक रूप से चयनित किये गये है।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सांवेगिक बुद्धि के मापन हेतु डॉ एस.के मंगल तथा श्रीमती शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित मानकीकृत इमोश्नल इन्टेलिजन्स इन्वेन्टरी का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पना 1 : उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि भिन्नतापरक होती है।

तालिका 1: सांवेगिक बुद्धि के विभिन्न स्तरों पर विद्यार्थी संख्या एवं प्रतिशत

विद्यार्थियों का सांवेगिक बुद्धि स्तर	विद्यार्थी संख्या (960)	प्रतिशत (%)
अति उच्च	21	2
उच्च	46	5
सामान्य	285	30
निम्न	459	48
अति निम्न	149	15

के स्तर के सन्दर्भ में पाया गया है कि अति उच्च सांवेगिक बुद्धि स्तर पर 2: विद्यार्थी हैं तथा 5: विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि के स्तर के सन्दर्भ में प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण अग्र प्रकार है– सांवेगिक बुद्धि विद्यार्थी उच्च सांवेगिक बुद्धि स्तर पर हैं। सामान्य स्तर पर 30: विद्यार्थी तथा निम्न स्तर पर 48: विद्यार्थी हैं। अति निम्न स्तर पर 15: विद्यार्थी हैं। उपर्युक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अति उच्च सांवेगिक बुद्धि व उच्च सांवेगिक बुद्धि के स्तर पर विद्यार्थियों का प्रतिशत कम (2:, 5:) है। सामान्य तथा निम्न स्तर पर विद्यार्थियों का प्रतिशत अधिक (30:, 48:) है।

प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर यह परिकल्पना स्वीकृत होती है अर्थात् उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि भिन्नतापरक होती है।

परिकल्पना 2 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में लिंग के सन्दर्भ में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

तालिका 2: लिंग वार विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि के मध्यमान में अन्तर का सार्थकता स्तर

Gender	N	Mean	SD	df	t-value	Table value	Level of significance
छात्र	497	58.40	10.807	958	**1.145**	1.964 (at 0.05 level) 2.58 (at 0.01 level)	Not significant
छात्रायें	463	59.21	11.146				

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की सांवेगिक बुद्धि का मध्यमान 58.40 व प्रमाप विचलन 10.807 है। छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि का मध्यमान 59.21 तथा प्रमाप विचलन 11.146 है। दोनों माध्यों के मध्य अन्तर की सार्थकता हेतु ज्ञात टी–मूल्य 1.145 है टी का सारिणी मूल्य 0.05 स्तर पर 1.964 तथा 0.01 स्तर पर 2.58 है प्राप्त टी मूल्य 1.145, टी के सारणी मूल्य से कम है अतः उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र तथा छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर यह परिकल्पना स्वीकृत होती है। उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में लिंग के सन्दर्भ में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है। छात्र तथा छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि समान होती है।

परिकल्पना 3 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में संकाय के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

(अ) उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला संकाय व विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

(ब) उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययरन कला व वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

(स) उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विज्ञान व वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका 3: संकाय वार विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि के मध्यमान में अन्तर का सार्थकता स्तर

Stream	N	Mean	SD	df	t-value	Table value	Level of significance
Arts	320	58.22	10.951	638	1.605	1.964 (at 0.05 level) 2.58(at 0.01 level)	Not significant
Science	320	59.63	11.170				
Arts	320	58.22	10.951	638	0.356	1.964 (at 0.05 level) 2.58(at 0.01 level)	Not significant
Commerce	320	58.53	10.781				
Science	320	59.63	11.170	638	1.264	1.964 (at 0.05 level) 2.58(at 0.01 level)	Not significant
Commerce	320	58.53	10.781				

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला संकाय के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि का मध्यमान 58.22 व प्रमाप विचलन 10.951 है । विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का मध्यमान 59.63 व प्रमाप विचलन 11.170 है। दोनों माध्यों के अन्तर की सार्थकता का टी–मूल्य 1.605 है। टी का सारणी मूल्य 0.05 स्तर पर 1.964 तथा 0.01 स्तर पर 2.58 है। प्राप्त टी मूल्य 1.605,सारणी मूल्य से कम है। अतः कला तथा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला संकाय के विद्यार्थियों का मध्यमान 58.22 प्रमाप विचलन 10.951 है। वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि का मध्यमान 58.53 प्रमाप विचलन 10.781 है। दोनों माध्यों के अन्तर की सार्थकता का टी–मूल्य 0. 356 है। टी का सारिणी मूल्य 0.05 स्तर पर 1.964 तथा. 0.01 स्तर पर 2.58 है। प्राप्त टी मूल्य 0.356, सारिणी मूल्य से कम है। अतः कला संकाय व वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि का मध्यमान 59.63 तथा प्रमाप विचलन 10. 781 है, वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि का मध्यमान 58.53 तथा प्रमाप विचलन 10.781 है। दोनों माध्यों के अन्तर की सार्थकता का टी–मूल्य 1.264 है। टी का सारिणी मूल्य 0.05 स्तर पर 1.964 तथा 0.01 स्तर पर 2.58 है। प्राप्त टी मूल्य 1.264, सारिणी मूल्य से कम है। अतः विज्ञान तथा कला वर्ग के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। उपर्युक्त विवेचन द्वारा ज्ञात होता है कि संकाय के सन्दर्भ में निर्मित तीनों परिकल्पनाऐं स्वीकृत होती हैं। अर्थात् तीनों संकाय (कला, विज्ञान व वाणिज्य) के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में समानता पायी जाती है।

तालिका 4: बोर्डवार विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि के अन्तर का सार्थकता स्तर

Board	N	Mean	SD	df	t-value	Table value	Level of significance
UK	480	59.66	10.514	958	2.459	1.964 (at 0.05 level) 2.58(at 0.01 level)	Significant at 0.05 level
CBSE	480	57.92	11.360				

परिकल्पना 4– उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बी.एस.ई.यू बोर्ड व सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया जाता है।

तालिका से स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत उत्तराखण्ड बोर्ड के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि का मध्यमान 59.66 व प्रमाप विचलन 10.514 है। सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि को मध्यमान 57.92 तथा प्रमाप विचलन 11.360 है। दोनों माध्यों के अन्तर की सार्थकता का टी मूल्य 2.459 है। टी का सारणी मूल्य 1.964, 0.05 स्तर पर तथा 0.01 स्तर पर 2.58 है। प्राप्त टी मूल्य 2.459 0.05 के सारणी मूल्य से अधिक है। अतः बी.एस.ई.यू व सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अन्तर है।

निष्कर्ष

- उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि भिन्नतापरक होती है।अर्थात् विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि समान होती है।
- उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में लिंग के सन्दर्भ में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है। छात्र तथा छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि समान होती है।
- उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में संकाय के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। कला, विज्ञान , वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि समान होती है।
- उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में विद्यालयी बोर्ड के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया जाता है। सी.बी.एस.ई. तथा बी.एस.ई.यू. के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि समान होती है।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि को विकसित करना है। अनुसंधान कार्य के परिणाम भावी नीति निर्धारण की आधारशिला बनते है। व्यक्ति विगत अनुभवों से सीखता है तथा उसके अनुरूप कार्य करता है।अतीत के अनुभव व्यक्ति के वर्तमान और भावी समस्याओं के समाधान का मार्ग प्रशस्त करते हैं एवं नीति निर्धारण का निर्णय लेने में सहायक बनते हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन अध्यापकों का ध्यान इस ओर इंगित करता है कि वे विद्यार्थियों की व्यक्तिगत व शैक्षिक समस्याओं को समझ कर उन्हें दूर करने का यथा संभव प्रयास कर अभिप्रेरित करें व विद्यार्थियों में निम्न आत्मविश्वास, संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के कारणों को जानकर उन्हें दूर करने का प्रयास किया जाना चाहिए। प्रस्तुत शोध अध्ययन विद्यार्थियों के लिए भी उपादेयता रखता है । विभिन्न संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्मविश्वास वाले विद्यार्थी मेहनत करके अच्छी शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त कर सकते हैं। विद्यार्थी समय समय पर विद्यालय में आयोजित पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेकर सहभागिता एवं उत्तरदायित्व के गुणों को विकसित कर सकते हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन अभिभावकों के लिए विशेष रुप से उपयोगी है। अभिभावकों को चाहिए कि वे अपने पाल्यों की मुक्त कंठ से प्रशंसा करें एवं उनमें स्वस्थ प्रतियोगिता व आत्मविश्वास को विकसित करें जिससे उन में तनाव प्रबंधन की क्षमता विकसित हो और सफलता प्राप्ति के निर्धारक तत्व आत्मविश्वास एवं संवेगात्मक बुद्धि का विकास हो सके ।

शोध का परिसीमन

- यह अध्ययन केवल उत्तराखण्ड राज्य के गढ़वाल मण्डल के चार जिलों में स्थित उच्च माध्यमिक विद्यालयों तक ही सीमित किया गया है।
- इस अध्ययन में कक्षा 12 के बालक व बालिकाओं को न्यादर्श में शामिल किया गया है।
- इस अध्ययन में केवल 'सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ सेकन्ड्रि एजुकेश्न (सी.बी.एस.ई.) तथा 'बोर्ड ऑफ स्कूल एजुकेश्न उत्तराखण्ड (बी.एस.ई.यू.)' को ही शामिल किया गया है।
- इस अध्ययन में नवोदय विद्यालय एवं विशिष्ट विद्यालयों को सम्मिलित नहीं किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. जेम्स, डी0ए0 पार्कर व अन्य 2004, 'द रिलेशनशिपप बिटविन इमोशनल इन्टेलीजेन्स एण्ड एकेडेमिक एचीवमेन्ट इन एलीमेन्ट्री स्कूल चिल्ड्रन' रिट्राइवड फ्रॉम 22 जुलाई 2017, http//w.w.w.doestoc.com
2. उमा देवी एण्ड रोमाला रयाल (2005) द रिलेशनशिप बिट्वीन इमोशनल इन्टेलीजेन्स एन्ड इन्टेलैक्चुअल एबिलिटीज ऑफ एडॉलसेन्टस *जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलोजी* (23) (2) विशाखापत्तनम आंध्र यूनिवर्सिटी प्रेस
3. सौम्याह एस. एन्ड निगम्मा सी.बी. (2010) 'इमोश्नल इन्टेलिजन्स इन रिलेशन टु पर्सनैलिटी' *साइको लिंगवा,.*(40)जन. जुलाई 2010 *साइको लिंग्विस्टिक एसोसिएशन ऑफ इन्डिया*। आइ.एस.एस.एन. 0377–3132, (93–96)
4. बिन्धु सी.एम. (2011), 'सेल्फ असर्टिवनेंस एन्ड इमोश्नल इन्टेलिजन्स ऑफ हायर सेकेडरि स्ट्यूडेन्ट्स' जी.सी.टी.ई. जनरल ऑफ रिसर्च एन्ड एक्सटेन्शन एन एजुकेशन, (6), (2) जुलाई 2011, पृष्ठ (14–17), गवर्मेंट कॉलेज ऑफ टीचर एजुकेशन तिरूवनन्तपुरम केरलां

5. खान, महमूद अहमद व अन्य 2012, 'इमोशनल इन्टेलीजेन्स ऑफ चिल्ड्रन ऑफ वर्किंग एण्ड नॉन वर्किंग मदर्स, रिट्राइवड फ्रॉम 18 अगस्त 2017, http//w.w.w.sciencepub.nt/researcher
6. शर्मा, दर्शना व बन्दना 2012, इम्पैक्ट ऑफ इमोशनल इन्टेलीजेन्स एण्ड होम इन्वायरमेन्ट ऑन सेल्फ कॉनसेप्ट ऑफ एडोलेसेन्टस इण्डियन स्ट्रीमस रिसर्च जनरल, (2), (5,) (920–923)।
7. जेम्स, डी0ए0 पार्कर व अन्य 2004, 'द रिलेशनशिपप बिटविन इमोशनल इन्टेलीजेन्स एण्ड एकेडेमिक एचीवमेन्ट इन एलीमेन्ट्री स्कूल चिल्ड्रन' रिट्राइवड फ्रॉम 22 जुलाई 2017, http//w.w.w.doestoc.com
8. दूबे, रूचि 2012, इमोशनल इन्टेलीजेन्स एण्ड एकेडेमिक्स मोटीवेशन अमंग एडोलसेन्टः ए रिलेशनशिव स्टडीः जिनिथ इन्टरनेशनल जनरल ऑफ मल्टीडिसीप्लीनरी रिसर्च, वॉल्यूमः 2, अंकः 3, मार्च 2012
9. ओबिओमा, हेलन ओगेमिका 2012, ए स्टडी ऑफ इमोशनल इन्टेलीजेन्स एण्ड लाइफ एडजेस्टमेन्ट ऑफ सीनियर सेकेण्डरी स्कूल स्टुडेन्ट इन नाइजीरिया, रिट्राइवड फ्रॉम 19 जून 2017, http//ocnferences.cluteonline.com